प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

मानव स्वभाव से ही कालिप्य है। मृत्तिका के शब्दों में -- "सातहित्य समीत का विहीन : सातहित्य पूर्व पुक्क विषयाणार्जनम्।" विद्युद्वाहः कालिप्य अर्थाणी पूर्व के समान ही है। श्रद्धियों में मी कृति सर्वार्धिक सम्बन्धील आत्मा होता है तथा लिखि कहानियाँ के प्रूढ़ि उपका प्रम सामान्यिक ही है। ह्यायानादी कथियाँ की सवाची में लिखि कहानियाँ के प्रूढ़ि उनके रूपकान की फलस्वरूप और मी जीवन की फलस्वरूप है। हेन्द्रकुमारें में सुलिमानदन पंत कहते हैं।

*लिखि कहानियाँ से परती का रूप के प्रती मनुष्यिन, जीवन के ज्ञान जीवन के लिपिंग्य जीवित। भूतक के ज्ञान वृद्ध में, उन में ही जीवन जीवित, काव्य स्बाय रूपकान जीवन का जीवन कुल स्बाय बौद्धिक।*

महाकृति ज्ञानशर्कर प्रसाद ने मी कृति कहानी का अर्थ विषय के मी कृति कहानियाँ की विशद व्याख्या की है। मूलभूत कृति चित्रकला की पूर्वतंत्र और कविता का पूर्वतंत्र होता है। यह दोनों का रूप पर भारतीय कला किया है तथा इसे सी-वृत्त के जीवन है।

लिखि कहानी

कृति निराक्षर लिखि कहानियाँ का जीवन का समाहृत मानते हैं।

1. हेन्द्रकुमारें : सातहित्य समीत, पृष्ठ ४६।
2. कृति वैर कहानी का अर्थ विषय : ज्ञानशर्कर प्रसाद, पृष्ठ ३३-३५।
कहते हैं --

“यस्मृति नृत्त, वस्तु-वास्तु-कौशल-कहा नवल,
विज्ञान-शिल्प-साहित्य सकल मूल-सकल,”

महादेवी ने “दीपशिला” में चलित कहानियों की उत्पत्ति तथा उसके
पद-चिन्हों का विशद रूप में वर्णित किया है। उनके शब्दों में -

“कहा सत्य की शान के चित्तम विस्तार में नहीं लौटी अनुभूति
की चिंता के वट से एक विशेष बिन्दु पर गुजरना करती है।” यही नहीं,
चित्रित कहानियों में काव्यकला की अनुभूति महत्व देती हुई उन्होंने दिखाया है -

“शृंखले के विस्तार में कहा-कहानी की पारंपरिक की यूकलिमा, रंग रेखा की
विचित्रता, खूंट का मात्र कब कब क्यों कर देते की सृष्टि घटक हो गई।
काव्य में कहा का उत्कर्ष एक ऐसा खिलु दिया गया, जहाँ के वह शान
की सहायता दे सका।”

वाला, प्रकाश: चलित कहानियों की संख्या बौंसट मानी गई है किन्तु
उनमें अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचलित पाँच ही हैं - वास्तुकला (स्थापत्यकला)
मूल-जड़, चित्रकला, कल्पना तथा काव्य कला। प्रायः तनावों एवं सहायक
वाक्य में उनके दृष्टि के से कहारे इसमें स्नात में क्षुमा की और क्रिया होती
गई हैं। यानि वास्तुकला विशेष रूप से काव्यकला समस्त तथा काव्यकला सूचकतम है।
वैसे वह कहानियों के बनाने का वाद में चमस्त चलित कहानियों का एक समाहार हो
जाता है। जैसे वस्तु-विन्यास (पुंच-कौशल या प्रानत्ये) में स्थापत्य
का, कल्पना एवं विशेष विषय में मूलकला का, काव्य-शैली में चित्रकला का
एवं कः ध्रुवकी जाँच का संकेत का पत्ता पूरा होता है। तात्पर्य यह है कि काव्यकला

1. वाला, प्रकाश: अपारा, पृष्ठ १३०.
2. दीपशिला: मूलकला, पृष्ठ १.
3. वही, पृष्ठ ७-८.
समस्त कालांक की रूप है। यही कारण है कि बांयाबादी काव्य में भी हन्तक जान के लोक कालांक का न्यूनार्किस्ट उत्तेजक प्राप्त हो जाता है। प्रसिद्ध पृष्ठ १६ में हन्त गिरिस्त कालांक का वर्णन उत्तेजक करता उपयोगी होगा।

स्थापत्य कला

हिंदू वास्तु विज्ञान का समान विषय का भी कहा जाता है। लिखित कालांक की जन्मस्थली होने के उपरांत भी इसका संबंध व्याख्यातारिक उत्पत्ति से अलग है। व्याख्याता स्कूल के यथार्थ के कठोर बहस पर स्तंभ होने के कारण यह बांयाबादी का व्यय के बढ़ते समय नहीं थी। फिर भी घर-घर रूप में इतना का उत्तेजक उत्तेजक नहीं होता। निरालाम ने कुहुरूपी काव्य के वास्तव-सामग्री की दृष्टि से पिरामिड, मंदिर, मस्जिद, मिःमराब, गुंबद बांधका का उत्तेजक कर अपने वास्तवन का प्रमाण दिया है। पंज की पर्वकारावत ने मधुर कस्टोगोल का वर्णन किया है। उन्हें कई मुख, मुंहां, बांधका का उत्तेजक है जिसका स्थापत्य कला के पृथ्वी की वजह बना है। महापुरोहित ने वातावरण विद्युत की दृष्टि से कुछ भक्ति का उत्तेजक है। उन्होंने कुल काव्य ने कुल काव्य को कामयाबी की गरीबियों के कारण प्रकट करते हुए कहा। कुला, कुटीर तथा प्रागार का वर्णन किया है। स्थापत्य कला की दृष्टि से मद्दत का बांधका के युग को अर्थतः नहीं तथा उसके राज युग का वर्णन उत्तेजक है।

पुस्तिका

बांयाबादी काव्य में इस कला का उत्तेजक कम ही मिलता है। पंज की पुस्तिका का 'शिव' नाम दिया गया है तथा 'शिल्प' का नाम पक्का।

1. कुहुरूपी, पृष्ठ ४५०।
2. वीरत का कथित, पृष्ठ ६५, ६६, ६१ वांछ।
3. कामयाबी, पृष्ठ २५४।
में एक देश का कादम्बर का कपड़ा इतना ही हो जैसे जो पुस्तक का काट-कट कर 
मुखिया पहुंचते हुए उसी में अपने कपड़ों को लाकर करने का प्रयत्न करता है। 
इस शवका के माध्यम से कवि ने मुखिया निलम्ब करके अपनी पुस्तक का परिचय 
दिया है। महादेवी ने "दीपिकाला" में एक स्थान पर कहा है -- "व्यक्तित्व 
रूप के मुखिया मुखिया विशेष वाक्य से वाक्य से वाक्य से वाक्य करते हैं जो कि उसके कादम्बर के 
वाक्य का वाक्य ही नहीं वाक्य वाक्य वाक्य वाक्य वाक्य करता है।" पर अपने 
कादम्बर में मुखिया का कोई विवेक उन्होंने नहीं दिया। इसके विपरीत कादम्बर 
के साथ-साथ विचार के निर्भर में उनकी विचारधारा के सहित प्रतिविद्ध होती है। इसी 
प्रकार, यहां भी इस कद्दर पर विचार अवधि लिखा है पर 
अपनी अवधि में छुड़ का उद्देश्य नहीं किया।

चिन्तका

चिन्तका की प्राप्त कादम्बर का निकट माना गया है क्योंकि 
होने के प्रस्तुत श्रेणी में समानता होती है। छठर यही है कि चिन्तका में 
स्थान तथा कादम्बर में गठनकारिक स्थान का विचार होता है। हायाबाद 
की चिन्तका का गुज़र किया गया है। हायाबादी कवियों ने चिन्तका 
संबंधित उपकरण से श्रेणी, व्यक्ति, प्राङ, चिन्तकाल आदि का उल्लेख 
करने के साथ ही साथ अपनी अवधि रचना, कथनांशी तथा भावना को चिन्तका 
वस्तु का प्रकट किया है। पंकु की तो रूपस्तु रूप ने कहा है -- "हायाबादी 
शैली में माया और उस बन्धन-यात्रा करके, शून्य की चिन्तकालता का प्रकट किया 
है।" पंकु के पूरे कादम्बर में पुकारे के चिन्तका के विविध विचार वाक्य प्राप्त होती है, 
साथ ही उन्होंने अपने एक हृदय कादम्बर, तो भिन्न, कहा चेतन यौ भौतिकता 
तथा उद्यान के उपर चिन्तका की विचार दिखाई है। निराला ने अपने 
शून्य चित्रों में नारी रूप का चिन्तका बताया किया है। महादेवी ने एक सिद्ध
चित्रकृत छोटी के नाटे चित्रकृत का विस्तृत विशेषण नहीं है। क्योंकि यह वस्तु का प्रतीक नहीं है। विशेषण का महत्व नहीं है। इसका उपयोग केवल विभिन्न तथ्यों के लिए है।

kahd a saka bah चित्रकृत का विस्तृत विशेषण नहीं है। क्योंकि यह वस्तु का प्रतीक नहीं है। विशेषण का महत्व नहीं है। इसका उपयोग केवल विभिन्न तथ्यों के लिए है।


dhāpa-kār dhāwa प्रकार के कृत्तियों के लिए अनि उपन्यास तथा भव्य साहित्य के प्रकार महत्वपूर्ण है। चित्रकृत का विस्तृत विशेषण नहीं है। क्योंकि यह वस्तु का प्रतीक नहीं है। विशेषण का महत्व नहीं है। इसका उपयोग केवल विभिन्न तथ्यों के लिए है।


dhāpa-kār dhāwa प्रकार के कृत्तियों के लिए अनि उपन्यास तथा भव्य साहित्य के प्रकार महत्वपूर्ण है। चित्रकृत का विस्तृत विशेषण नहीं है। क्योंकि यह वस्तु का प्रतीक नहीं है। विशेषण का महत्व नहीं है। इसका उपयोग केवल विभिन्न तथ्यों के लिए है।

कर्ता का काव्य का साथ अन्य काव्य संस्करण है। अध्यावासी काव्य भंगीत का कारण भंगीत का प्रवृत्ति तथा मान्यता के लिए है। इसके कवियों के अन्य काव्य में कर्ता का काव्य के ब्रह्म पारिमानिक ज्ञान और प्राचीन ज्ञान, लोक काव्य, माध्यम काव्य, महाकाव्य और अन्य का प्रस्तुत किया है। काव्य ने अन्य काव्य में आदर्श के अन्य दिस्की के लिए संस्करण के साथ प्रमाणित किया है। निरांक ने 'संस्करण' के अन्य आदर्श के अन्य दिस्की के लिए संस्करण के साथ प्रमाणित किया है। निरांक ने संस्करण के अन्य आदर्श के अन्य दिस्की के लिए संस्करण के साथ प्रमाणित किया है।

प्रकारण को स्वरुप किया है। जब प्रकारण को स्वरुप किया है। जब प्रकारण को स्वरुप किया है।
काव्य का

भारतीय काव्यशास्त्र के बारे में काव्य के दो रूप माने गए हैं —
दुःख तथा श्रद्धा। दुःख काव्य के ताल्पर नाटकों से होता है। श्रद्धा काव्य के दो भेद होते हैं — गद्द तथा पव। गद्द के उपन्यास, कहानी, सिवन-बाद में विभेद होते हैं। पव के दो मुख्य भेद माने गये हैं प्रवन्ध एवं भवक। पुनः प्रवन्ध के दो महाकाव्य तथा कपड़काव्य दो भेद है। काव्यावली नविवृतरूप से इन मध्ये काव्य रूप प्राप्त किया तथा हिंदी काव्य भंडार की अवधि की।

काव्य तथा चित्रकला का संबंध

काव्य और चित्रकला का संबंध महत्वपूर्ण है। साधारणतः चित्रकला में चित्रांगद्व माने जाते हैं। इसमें —
(१) आय भेद (२) वर्णाली (३) मात्र (४) भाग्य वोजना (५) सांशंकर तथा (६) लघुकाला मां। यद्यपूर्वे इन बांग्ला का रंगिन पत्र विचारण पुस्तक करने का वार्तक है:

(१) आय भेद

विभिन्न पुस्तक की आकृतियों और उनके विशेषों का वर्णन हर कोई बनावता है। इसमें मानव आकृति के लघुकाला तथा आभासक भी सम्यक है।

(२) प्रामाण

"इसे पुस्तक ही है भारतीय चित्रकला अंग-कुट का कुड़ कहते हैं।"

9. भारत की चित्रकला: राय-कुट, पृष्ठ १।
2. वहीं, पृष्ठ २।
(3) भाव

भाव है तात्पर्य शारीरिक के साथ-साथ मानसिक दशा के चित्र प्रस्तुत करते हैं। यह भारतीय चिकित्सा की स्वाभाविक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। भाव चित्र स्वृत्तिचित्र से भिन्न होता है। स्वृत्ति चित्र में स्वृत्ति के बारे में विचार या व्यक्ति का चित्र मात्र स्मरण जाता है जबकि मात्र चित्र में चिकित्सा और चित्र के विषय (भाव) में कल्पनागत तात्पर्य स्थापित हो जाता है। रायकृष्ण दास के लेख में भाव चित्र में "चिकित्सा करने वाले" चित्र की समस्त विशेषता और उसके प्रति सम्मोह वहांतुल्लित हो जाता है। उसकी ऐसी आत्मा बनाने के उद्देश्य के कारण, उसकी ऐसी आत्मा बनाने के समय होता है क्योंकि बाह्य ही नहीं, व्यक्तित्व का, बनाई स्वूल शरीर या ही नहीं, पत्थर शरीर का कारण भी होता है। निष्कर्ष: भाव चित्र में भाव विशेषताओं पर रहता है वेष्टा वाला चाहते वनार की स्थिति वैविकित्व है।

(4) लावण्य योजना

इसका संबंध बाहरी लीडर्स भी है। चित्र में लावण्य योजना की बच्चों के रूप है जोवशस्त्र है। विषम आकृतियां इस प्रकार ठीक ठिकाम ने चित्र की आकृति जो समृद्ध प्रभाव हालने में समान हैं और चित्र में रामरथिता उत्पन्न कर देते।

1. भारत की चिकित्सा: रायकृष्ण दास, पृष्ठ ५।
2. वहीं, पृष्ठ ६।
(५) वाद्य

इसका संचाल इस बात ये है कि यद्यपि विचारण व्यक्ति या घटना को
ैलो ही पहचानना है। यह तभी संभव होगा जब वाद्यकक्ष व्यक्ति या वस्तु
और चित्र में एक प्रकार की समानता है।

(६) विचारण मा

इसका अंचल उन संस्कृत के हैं। चित्रकला के लिये वाद्यकक्ष है
तो यदि चित्र के किसान के वनस्पति संस्कृत की प्रशंसा कर। ऐसा कारण था ये विचार
णों में ही संशय हैं और विचारण भी किशों उनमें वस्तुकुल को ही नाम चाहिये।

चित्रकला के बारे में काव्यमा की लुलना

चित्रकला के वे ६ बंग संवादण, मानव के बाह्य और आन्तरिक
मौलिक तथा मानुष के सम्बन्ध हैं। कव्य में जब चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं, उनमें
भी मूल बाद का बाद और आन्तरिक मौलिक वाद को चित्रित किया जाता है। कुछ
दृष्टि के कारण भी होते हैं जो काव्य में विचारणक्षण में इन चित्रों में रासों का संचाल
भी नहीं होता है, उदाहरणार्थ यह मशहूर विद्वान ने 'स्वप्नित्या' में प्रस्तुत चित्रों
में आकाश दलके रासों का ही प्रशंसा किया है। उनकी कव्य भाषा-चित्र प्रस्तुत
करने में भी विचारण होते हैं। इस दृष्टि के प्रशंसा स्वप्नित्या है। प्रस्तुत प्रशंसा
का विचारण एवं वर्ण ही होतें विशेष तथा गर्व के विचारण प्रकारों का प्रशंसन
नहीं किया जा रहा है। काव्य-शास्त्र में काव्यशास्त्रों के बन्धुकूट अस्तिक रूप,
गुण, तीर्थ, अर्थादि बाद का विचारण किया जाता है। अर्थादि चित्रों
में उल्लास, व्यवहारादि भाषा के ही संचाल हैं। यही विचारण रूप और गुण
को पूरा है। जानकी में भाषा का शीघ्र संचाल होता है। उच्चतार रूपादिका
वाद्य क्षेत्र पर आधारित है। चित्रकला के बंग में जिथे विचारण कहा गया
है वह होता है, कहा है। कव्यांत: चित्रकला के बंग में कव्यकला के बंग में
भी किशों-नसिमें बने हैं।
यह प्रथम श्रायावाद के प्रमुख स्तर के जवाब के समस्याओं के साथ है जब:

फ़िल्म प्रसार की चित्रात्मकता के विवरण है पूरी श्रायावाद के विषय में परिवर्तनकल्पना उल्लेख किया जाता है। इसी प्रकार चित्रात्मकता श्रायावाद की प्रमुख प्रारम्भिक है, विशेषता है जब: श्रायावाद के स्तर पर प्रकाश दाना बनावटक न होगा।

श्रायावाद के स्तर

हिन्दी साहित्य के इतिहास में श्रायावाद का प्रादूर्भाव अपने आपसे नहीं हुआ वरन् उत्कर्षीय धूम की आंग तथा फूलीची धूम के प्रति-क्रिया स्तर स्थापनक था। हालांकि, हिन्दी साहित्य में माइ की वापसी वैचित्यता तथा बैतिकता का स्थान बनकर महत्वपूर्ण हो उठने के ठीक उसमें उस भीमन-रस का निर्माण बनाव हो बुझा था और पाठक का अर्थ अध्यायित कर है। ऐसी विचार भी मार्ग की चूढं तथा शैली की विशेषणों जिन्हें श्रायावाद अर्थात तुलना की बौद्ध पूर्णता को तूफ़िक भिकी।

श्रायावाद के स्तर को रूप से लेने के लिए विभिन्न विवरणों ने अपने-अपने मत दिखाई है। कुछ प्रमुख विवरणों के मरां का मरां उल्लेख किया जा रहा है। क़र्तम जयशंकर श्राद के कुछ में कांग्रेस व्यक्ति ने फिर जब वेदना के आधार पर लगभग भिकी जानी, तब हिन्दी में उसे श्रायावाद के नाम से अभिव्यक्त किया गया।

महाकवि निरुशा के भी कहा है—

“श्रायावाद की कविताएँ माना साहित्य के विकास के रूप के विचार के बिन्दु विकसित हुआ है। वहाँ-वहाँ उन कवियों में तूफ़िक आ गई बहाँ-बहां

और

1. को क्यों तथा अन्य निदेश: जयशंकर श्राद, पृष्ठ २२२.
बहुत बच्ची तरह प्रुमाण फिट जाता है। "हायाचाद को एक नहीं बैठता वर्णि करते हुए पंप कहते हैं -- "तिमाही युग के बाद हायाचाद के युग का समारूह होता है। मन की नीरव दीविया के निकट कर, छाँट मरे तीन-बर्मे में घिरती एक नीन्ह नायिका वेदना युग के निरूप प्रुमाण को सहस्र स्वर्ण मुका कर देती है।"

हायाचाद को संविदाद की संग रहते हुए महादेवी ने वर्णि किया है --

"हायाचाद स्मृति की प्रुतिकिमा में उल्लमन हुआ था जब: स्मृति की उल्लमन रूप में स्त्रीकर करना उसके लिए संशोधन न रहा। हायाचाद सो क्रिया को हायाच ने लोक-संरक्षण के साधन से स्वयं होने वाला पाणिनिक संविदा ही रहा है और उसी रूप में उसकी उपाधिगता है।" 3

हाओ रामचुम्बर नया कहते हैं कि "हायाचाद वास्तव में इतनी की एक रूपक है। यह मान्यता संचार के बीच में प्रेम कर अनन्त जीवन के तत्त्व गृह नाम करता है और उसे इस व्यक्तिवादित जीवन के मूल-कर उदय में जीवन के प्रति एक गहरी ध्येयता और बायाचार श्रृदंद करता है।"

बायाचार रामचुम्बर शुक्ल इमागाचाद को काय शेंकी का बहुत वन्न विकार माना हुए कहते हैं -- "हायाचाद की शाखा के बीतर छुन-चुन का गी-शेंकी का बहुत बंधा विकार हुआ इक्केंद्र उन्नेतर नहीं। इक्केंद्र पावासच की वाकुल घरपाना, बायाचारितिक बैलाफ्फ, मूली प्रदेश विशेषता, भाषा की वज़ना, निरोप रागिना, कोम्ह-पद-विनियम हत्यार शैवाच का स्वरूप क्षेत्रित करे वाकी प्रुता सामग्री।

---

1. पुस्तक-पत्रिकः निराला, पृष्ठ १५।
2. वाद-प्रमुखः कामायीनी लिखक - पंप, पृष्ठ १५५।
3. महादेवी का विचारकात्मक ग्रंह, पृष्ठ ४०।
4. विचार करीबः हाऊ सामुहिक वन्न, पृष्ठ ७२।
दिलाई पड़ी ।

नन्दनलाल रे वाजपेयी के अनुसार "भाषा व्यस्तता प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्ति जीने में आभासिक क्षमा का मान भरे विचार से ह्यावाद की एक भौमान्य व्यस्तता की बाधा है।"

बांधार उहा रामप्रसाद बियोटी कहते हैं कि "ह्यावाद नाम उन आध्यात्मिक कविताओं के रूप में बिना विचार ही से दिया गया था --

(क) जिनमें मानववादी वृद्धि की प्रकृति थी

(ख) जो विधित्व विभाजन की अौगिकता विनियम और वृद्धि के रूप में स्थान जमकर जमकर जाती थीं

(ग) जिनमें मानवीय बांधार, ज्ञानवाद, ऐक्टाउं, और विज्ञान के विकास के रूप में हो जाना सब मूल्यों को ध्यानी से ध्यान करने की प्रवृत्ति थी।

(घ) जिनमें इंद्र, बलिंगकार, सति, वाण, तुक या का कल्पित विषय विभिन्न गतानुगतिकोटा वस्त्र का प्रमाण था और

(ङ) जिनमें साध्वीय शैलियों के प्रति कोई भास्त्र नहीं दिलाई गई थी।"

बांधार गुलाबराय की बांधार में "क़ेम फैल हे ह्यावाद को लगरे ने उसकी ऐतिहासिक वस्तुता के कारण इत्यादि नाम जैसा पुकारा हो और फिर वह नाम प्रवृत्ति हो गया है। कुछ भी हो इसमें ह्याय के सी-वित्त को शीत और स्वभावितता रहती है। ह्यावाद को वस्तुतास के अनुसार नहीं रहता, वह वस्तु ने एक आध्यात्मिकता का और स्वूच में 'लुस्त' की स्वर्ण आदर्श है। '__

-----------------------------------
1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : बांधार रामकृष्ण शुक्ल, पृष्ठ १४२।
2. हिन्दी साहित्य : बैबूर काल्पनिक : नन्दनलाल रे वाजपेयी, पृष्ठ १५२।
3. हिन्दी साहित्य : ज्ञानप्रसाद भट्टी, पृष्ठ १५२-१५३।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : बांधार गुलाबराय, पृष्ठ २२३-२२५।
श्री शानि-विविध प्रज्ञा के बुद्धियाँ "झायावाद केवल का व्यक्ति नहीं है। ज्ञान का धार्मिक तरीक़े के उसका संबंध है वहाँ तक तब कहा है और ज्ञान का धार्मिक बुद्धि के उसका संबंध है वहाँ तब एक प्राप्त है, एक सत्य है। वजन हायाकाव्य का व्यंग्य के केवल एक बिविधि है नहीं विशेष उसके ऊपर एक श्रेष्ठ बिविधि की है। "झाया" शब्द यदि उसके कहा के स्वरूप (अभिव्यक्ति) को पुर्व करता है तो "वाद" उसके बन्ध प्रकाश (अभिव्यक्ति) का। झाया की तरह उसके कहने में परिवर्तन होता रहता है, किन्तु उसका प्रकाश बदलःपुंसा रहता है।

ढाँ नींद उठते हैं कि *मूल के प्रति स्वरूप का विद्रोह दी है झायाकाव्य का आधार है। मूल शब्द बहुत व्यापक है। इसकी परिभाषा में वही प्रकाश के बाह्य रूप-परायम, भौलिया बिन्दु बिन्दुहित हैं और उसके प्रति विद्रोह का यथा है। उपयोगिता के प्रति मानवता का विद्रोह, तत्कालीन भौलियों के प्रति मानवीय स्वतन्त्रता का विद्रोह और काव्य के वंशनाथ के प्रति स्वच्छन्द कल्पना और तेक-नीक का विद्रोह।

उपरुपर का समस्त मतों को देखते हुए झायावाद रूप में झायाकाव्य के स्वरूप के विषय में कहा जा जाता है कि हिन्दी क्रिया की झायावाद जाया अपने पृथकीय मूल की प्रतिप्रकाश में प्रस्तुत एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण, एक विशेष द्राक्षीयविभिन्न रूप और एक निश्चितता है। इसमें तत्क्षण के बलाने बलावनकियता के बहाने तत्क्षण में प्रकाश का चिह्न है। 

1. वर्णार्थी: श्री शानि-विविध प्रज्ञा, पृष्ठ २२१-२२२।
2. सुभिन्नानंद पंत: ढाँ नींद, पृष्ठ ४०२।
शायावादी प्रस्तुत प्रस्तुतियाँ

शायावाद के स्वरूप निश्चित रूप से प्रस्तुत हुए स्वरूप के आचार पर कविता प्रस्तुत प्रस्तुतियाँ की विवेचना अत्यंत न होगी। शायावाद की स्वरूपता प्रस्तुति है — वैज्ञानिकता का प्रत्यक्ष। समस्त आचार, बन्धनों के स्वरूप-कर के रूप में स्व की विभिन्नता का व्यरूप शायावाद में ही मिलती है। शायावाद का कवि अपनी दुलौताओं को भी उल्लेख की है शिक्षक रूप में प्रस्तुत करता है जिवा वह अपनी पाठनता को विविधता करता है। अपने काव्य की मिश्रता-वस्तु को बुद्धियों में कहीं बात कर नहीं जाता वरन म बन्धन में उम्मुह वाले मात्रों को ही विभिन्नता रूप में प्रदर्शित करता है। पूर्ववर्ती काव्य में कवि को अपने बाल्यकालिक भावों का विभिन्नता के लिये राखृपण करते हैं तथा नन्दिनी स्वल्प बाल्य बालकों की वात अत्यंत होती थी। जबकि शायावादी कवि बालिका वस्तुता की भी निर्देशानलाएं ही हाँ कर देता है यही कारण है कि शायावादी काव्य में कवि के अपने बाल्यकालिक भावों का विभिन्नता के लिये नेशन करते हैं। कवि के अपने बाल्यकालिक भावों का विभिन्नता के लिये नेशन करते हैं। भारतराज फिर के शब्दों में 'शायावाद के नेशन करते हैं कवि की यह कवि की निर्देशानलाएं के प्रकाशन पर और दिया। काव्य-निर्देश बालकों की नहीं है मन के भीतर भी है। कवि की प्रत्येक अनुभूति कविता का विवाद है।' 'स्वल्प बाल्यकालिक भावों का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है।' वस्तुता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। अनुभूति कविता का विवाद है। 1. हिन्दी कविता : नीन, विशम, पृष्ठ २०२.
श्रायावाद की दूसरी प्रमुख विशेषता है — प्रकृति-चित्रण। श्रायावादी कवियों का मन प्रकृति के वर्णन में हूँ सका है। श्रायावाद की व्यक्ति का वर्णन प्रायः कथा की गात्र देने के निमित्त विश्लेषत: उद्दीपन रूप में किया जाता था। किन्तु जब तक की श्रायावादी पत्ती प्रकृति नित नयी श्रायावाद का कवि को अपनी ओर वाक्कल करने लगी। प्रकृति ने श्रायावाद में ही स्वयंचालन महत्त्व पाया जहां उसकी एक-एक कवि, बोध की एक-एक बौद्ध का भी स्वर्ण कित्तत है। निराला रचित 'वृक्ष' की कवि हरदा गद्यका ज्युलेन्ट प्रभाव है। कवियों के प्रकृति की ओर विश्वास का फुटफूट के कारण पर प्रकाश दावेदावे हुए हाँ हाँ नाफार-रंजें जो जल्द ही कहा है "श्रायावादी कवियों का प्रकृति की ओर फुटफूट, प्रकृति का ह्रजन महत्त्व देना, प्रकृति की स्वर्ण बौद्ध का काव्य में प्रवृत्तिप्रसन्नता का बीज हुआतिल करना — यह तब विश्वासका विश्वास का परिणाम है।" ऐसा नहीं है कि श्रायावादी कवियों का प्रकृति चित्रण मात्र वर्णन ही हो, उसके बाद पूरूपी अनुभवयों का रागात्मक तदार्थ के धूमधाम होता है। यही बात की ओर की लंकत करते हुए हाँ हाँ नौ-चौं के श्रायावाद भूमि की हिंदी कविता का मूल्यांकन करते हुए किया है — "श्रायावाद के कवि ने प्रकृति की अपनी अनुभूतियों का माध्यम बनाकर उसके लाभ लिया तदार्थ का अनुकूल किया वह भू-भाषा-मानविक न होकर रागात्मक एवं कल्पनात्मक था।" इसी पर देव कवियों का प्रकृति प्रेम वाक्कलीय है।

प्रकृति का मानवीकरण श्रायावाद की बहुत बड़ी विशेषता है और यह मानवीकरण भी विशेषता: नारेरो रूप में ही हूँ न हूँ है। प्रकृति कवि के इतिहास में, कवि, प्रेमकला श्रायावादी कवि नहीं हुई थी। यहा तर यह कवि प्रकृति की बिहसकर रघुत्तम का भी नहीं देखा बाहरा। —

1. श्रायावाद: हाँ नाफार शिख, पृष्ठ 33.
2. नवी ब्रह्मचार: नये शंदे, हाँ नौ-चौं, पृष्ठ 63.
"बौढ़ हुमें की फूल झायो,
लौट प्रकृति से मे झाया,
बाहे ! तेरे बाहर गाल मे कैसे उड़ाया हूँ लो ?
छू बनी से इस जा की !

किँ कि उसके कहता है, उसे मनाया है उसकी मुनाफर करता है :-

'खौफ दी ना, है मुंग कुमारी !
पुके मे जाने शीघ्र गान,
कुब्र के चुने कटारे धे
करा दी ना, कुब्र कुब्र पुष्पांन !

विश्व: यह मानिंद्रकाण शैलीगत विशेषता है जै विवेककाण पतिः
देवी है।

शायावाद की एक जन्म विशेषता है --
प्रेम-भावना का प्रावधान । प्रेम सुखद की सहजता प्रकृति है । प्रकृत कुरं के
काम्य मे प्रेम की परमाप शान फिताता रहा है । बाहर फैला बालमाण तथा
भाव का है । पूवत्री का भूमि प्रेम-भावना की अप्रमाणित जहां राधा कृष्ण
की जाग मे होती थी वहां शायावाद मे कितने बेहदक बने प्रेमपुरुष मान को ध्यान
किया है । प्रेम को उन्होंने बहुत ही महिमामय सही प्रदान किया । पूवत्री
का भूमि की कुलना मे बुद्धवाने की दृष्टि वे जून्य होते हुए भी अपनी शायूर्षीष
निर्वाण वेलंगाजों का जनाव होते हुए भी, शायावादी कवियों की प्रमुखपुरुषत
भाव की दृष्टि के चुम्ह थी । प्रेम के बहुत ही उल्लास तथा प्राण वर्णित पर पहुंच
जाने के कारण उसके बालमाण नारी के सीन्द्र द्वारा मानकेविणी परिवर्तित हो
गया है । शायावादी कवियों ने बननी अदुपुत कल्पना-उद्दिष्ट के द्वारा नारी का

--------------------------
1. 'बौढ़'- पलन : शुभकान्तन पंत, पृष्ठ 56.
2. 'मुहुर्तकी'- पलन : शुभकान्तन पंत, पृष्ठ 50.
जो मध्य रूप निर्माण किया वह सबक नाकी असंबंधित है । विषाद की प्रक्षेप की कंपनी वह कति प्रक्षेप के बाँधक निकट है । उसकी नारी मदिरा के समान उद्धुक नहीं बुरु रंगा के समान पत्थर है । विचारगण की बनी हुई उदा-वता के सात राम तथा ली-इल्ली की कृति देख हम अनुसरिताओं की अभिव्यक्ति देने के पश्चात्त भी जायकारी काव्य के भी वास्तव से गुप्त नहीं दीलता । कवि ने युगो-युगों से दिशित नारी की सुक्त कर उसे भिड़ बदल लैंड को गरिमा तथा महिमा ने मंडहित किया है वह संघ में सुलता है । नारी की महिमामंडित करने का अन्य स्वयंजीवन की कस्टों की दिखा जाते जो बन्द न होगा ।

वैदना का प्राधान्य जायकारी काव्य की महत्वपूर्ण निराकरण है ।

वैदना के तीन रूप माने गये हैं --

(१) समूही विश्व में व्याप्त एक ही वैदना की सृजन अनुमति ।
(२) दृश्यों के हुँस से उत्पन्न करणात जीव वाहनुक्ति की भावना ।
(३) व्यक्ति जीवन की अवकलनताओं तथा विभाज्यताओं से उत्पन्न विषाद की अनुमति ।

जायकारी काव्य में वैदना के ही दीनाओं ही रूप दृष्टिकोणतर होते हैं ।

प्रथम रूप की अभिव्यक्ति में हम देखते हैं कि संग को हुँसला मानते हुए भी कवि

इसी दृष्टि से हृदय का माना बताना बतूर में यह वैदना की संग के स्वभावी संघ के

रूप में लवकर करता है और वजन संग को वैदना में तीन कर देता भावता है--

"कर्म है उल्लंघ का पार,
हुँसता वैदना में विभिन्न बोल भरा संगार।" १

दूसरों के हुँस से उत्पन्न करणात की अवकल संग मिन्नत निराला

के वास्तव में मिलती है । विक्षा, "विखलक", वह तोड़ती पत्थरे बादि कवि-

तार्क इसकी ज्यादा प्रमाण है ।

-----------------------------------------------

१. साधितिम रचना : गुप्तमनन्द पंत, पृष्ठ ६.
वैद्यक के तीसरे भुगतान नियंत्री वैद्यक का जो शास्त्रान्वयन में प्राप्त होता है। इस कारण वैद्यकियों का प्रायोगिक होने के कारण काव्य में व्यक्ति के दृश्य तथा निराशा की अभिव्यक्ति स्वाभाविक है। वैद्यक का यह स्वर प्रश्न, वंत, निराशा तथा महादेवी यथा की कवितावर्ण उन्नत करता है। प्रश्न के शुद्ध भाषा—

„जो धनीमूल पीति यथा,
मस्तक में स्मृति-शिक्षा है।
दुर्भिक्षु में वार्तालाप, वह बाज बरकी आता है।“

वस्तुतः यदा कथा उभरे ताति इस निराशा का भी जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि अनंतता तथा निराशा की यह मानवी ही ज्ञाति की जीवन-समस्याओं में भागी बदलने के लिए शक्ति एवं संभव प्रवाह करती है। यह निराशा एकता: पूर्णार्थक है।

हायाकार्य का यथा रहस्यात्मकता है भी युक्त है। रहस्यावाद ज्ञान की परस्परता का चौथ और साता त्यार है। प्रश्न की के शुद्ध भाषा—

„इसमें अपराजों की अनुभूति, समर्थता तथा प्राकृतिक वो-दोष के दान का हेदाम में समन्वय करने का हूँड़र प्रयत्न है।“ वस्तुतः यह राधामान्वक अभमानति की यह ब्रह्मस्वर है जिसमें जीव गुड़ा में जिसके का पहला तथा वधकाल हो जाने पर तीव्र विरह का अनुभव करता है।

वस्तुतः साधना-वैज्ञानिक के कारण रहस्यावाद के अनेक रूप हो गये। उन विकिंद्र उपासना-पद्धतियों का कारण बनवान रूप है वैदिक काल से महिना——

1. श्रीम । जगन्नाथ ग्रन्थ, पृष्ठ ०१।
2. कः वैदिक तथा वज्र निवन्ध ।, पृष्ठ ०५।
काठ तक के भारतीय साहित्य में प्राप्त होता है। विशेष रूप से जीवन की बिन्दुवश लगान-स्थान पर प्रतिभाशाली हुई है।

व्ययनीश् भौगति के हीनें के का रंग प्राप्त है। हमारे लोक हायाबादी कवियों के प्राचीन साहित्य का व्ययन-मन निम्न था और उसमें गृह बयान-बने समय के बलुआर विभिन्न प्रमाणों का आलमाित कर जाने का ज्ञात न हुआ था। जुड़ता देखने प्रश्निक के उपर और बिजाने में अवधार का एक विराट शक्ति की कल्पना की गई थी और उनका परिचय पाने की उल्लेख हुआ तथा बिजाने को विभिन्न स्तर भें व्यक्तिक्रिया ने --

"कैन तम के पार? (रे, कह)"

"पर विभिन्न भावन स्थान मेरे!
तौड़ हो यह निरंजन में भी है कैसे हूँ उस जीरो क्या है?
आ रहे निकल पूर्ण दे युग कुल कुल उसका होर करा है?

हायाबादी कवियों में विभिन्नता शैली में आपूर्त परिवर्तन की बुजुर्गत होता है। भाव वादि कविता का प्राप्त होता है। तथा विभिन्नता शैली उसका आशार। हायाबाद युग में विभिन्न के दोष में वर्तमान के साथ ही कविता के आधार के स्त्री हैं जिस समय कविता के ही चक्क की हो और उसे पूर्ण कर विषय वस्तु तक जाने की बेदारन उसी की हायाबाद तमक कर विषय-वस्तु तक जाने की बेदारन उसी की हायाबाद का सम्पूर्ण समक समक भैं। भाषा का व्यक्तित्व ती वही कवि करते हैं जिससे हायाबादी कवियों ने उसे आपनी वश्वासिनी बना दिया। हायाबाद कवियों की परंपरा में जो कविताविरित कारण प्राप्त हुई थी, व्यक्तित्व सम्बन्ध हो गई है उसमें उस संग्रह तथा कोमलता का अंडना अवाच

-----------------------------
1. तत्त्व एवं अत्त्व तत्त्व: हायाबाद उपनिषद
2. कविता ५२ - गिराला, पृष्ठ ५१।
3. वाचकीयत: महाकवि बने, पृष्ठ ५५।
था जो अपने मायूर के किंवा का मन मौह की। झाौूळस्वर कवियों के अपने सबूत शिल्प के कौशल व्यक्त करते थे भाषण को एक स्वीकार नहीं बनाने के लिए कौशल काम न करने के की ही आवश्यकता थी।

इस युग के कवियों ने परंपरा से चले आये हूंड-चंगवारों को अस्तित्व कर बनाने काव्य में हूंड चंगवार बनाने मौलिक तथा अलंकार प्रयोग किया। निरंजण इस दृष्टि से कहने हैं। तत्कालीन काव्य में कविता का बहुत कामयाब रूप प्राप्त है जो राजस्तानों के गुण के समानत्व निहृते पर भी कवियों का निजी बालक है।

भौगोलिक दृष्टि से झाौूळस्वर व सांस्कृतिक वैश्विकता का प्राध्याय रहा। सांस्कृतिक भूमि प्रतीक मौजूदा, लाख अनुशासन, व्यंग्यक्ता और ज्ञान सभी जा जाए है। इन कवियों के प्रतीक-विवाह में हूंड और गुण-शास्त्र का बेहतर प्रभाव काव्य का बारे में है। प्रतीकों तथा विवेचन की प्रभुता के कारण विचारतत्वतात्त्विक, झाौूळस्वर माण्डल का एक प्रमुख गुण बन गया। प्रबुद्ध प्रबंध विचारतत्वतात्त्विक के हूंड ने। बत: इस पत्र का विस्तृत विवेचन भागे कथायों में किया गया है।

विचारतत्वतात्त्विक

विचारतत्त्वतात्त्विक के तात्त्विक है विचारित सबूत कविया, विचार-प्रमाण।

प्रत्येक कवि विचारित सख्त कारणो का विचार विचारित करता है जो पाठक की वेदना को उद्भवित कर देते हैं। वह विचारतत्त्वतात्त्विक काव्य का महत्त्वपूर्ण गुण माना जाता है। कुछ प्रत्यक्षरूप के बुद्धि तो काव्य की सबसे बड़ी शक्ति उसके विचारों में ही होती है और कवि की श्रेष्ठता का परिधि भी उनके काव्य में उपजते चित्रों में ही मिलता है। कवि की कविता कार्य निम्नलिखित चित्रों का

8. हिंदी साहित्य कौश, पृष्ठ ३३।
देखने से उस कवि की कल्पना-शिक्षा का परिचय प्राप्त होता है। कवि अपने बचारे और के वातावरण तथा वैज्ञानिक बुद्धि की अपनी अनुभवता में एकत्रित करता रहता है। कविता ज्ञान के समय यही बुद्धि चिन्ताएं उसे ज्ञानी दिखाते हैं। बुद्धि की प्रवचनता तथा अनुभवों का समझदारी कविता का समझदार व वैज्ञानिकता बना देती है।

विद्वान-पत्रिका की दूरे समयों में विज्ञान-पत्रिका या विज्ञान-विद्वान

पत्रिका की प्रमुख चिन्ता दूरी समयों में गुरुवार किया हुआ शुद्ध प्रमुख चिन्ता की प्रमुख चिन्ता अनुभव शिक्षा कहा गया है। इसी प्रकार का पारंपरिक पत्रिका के होते हैं। ऐसी पत्रिकाओं के बारे में हमें यह जानने ही होगा।

हायावाद के प्रमुख कवि हायावाद के प्रमुख कवि छोटे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे, लंबे.
(क) शुभमिश्रन-दन पंत

क्रांतिकालीन की कला की दृष्टि से समृद्ध करने का संवैचारिक शैल पंत की
की है इसकी खूबियाँ युग की लड़की बालकों की जी जी सकारा, रूपरेखा तथा रचना-
ता प्रसंग की है, वह विविधता रूपसे है। पंत की सत्ताओं की संख्या काफी है।
उन्हें धर्म के इस प्रकार रचना जा रही है - वीणा, मुनिध, पलब, गुंजन, गुणात, गुणवत्ता, गुणय, स्वरूपकिरण, स्वरूपभूषण, महा-
ज्ञान, मुनय, उदय और अनन्य।

पंत काव्य की लचीले बहुत विशेषता है प्रकृति कव्यिन। इसके प्रकृति
कव्यिन भी वैज्ञानिक होते हुए भी विभिन्नता: प्रकृति का कोई रूप ही निरीक्षण
है। प्रकृति के प्रकृति दुर्लभक जिसका तथा जमलका भाव कुलका: इसका
प्रति ही होता यह है कि कवि उस पर रचना कर उसके साथ एकाकार हो जाना
चाहता है। पंत की प्रकृति जड़ नहीं है, भाषिय भाषाओं से विशाल,
हाल तथा जीवन सहवरी के रूप में लाई है। उनके काव्य में प्रकृति मात्रा
वर्णी वसूल न रखना कवि के जीवन का भाग लग गई है। प्रकृति
के जिनके मनोरंजन तथा विद्वान चित्र पंत ने प्रस्तुत किया है उनके कितनी अन्य कवि
नहीं है।

प्रकृति के पश्चात् पंत काव्य की दृष्टि प्रमुख विशेषता है बीन्दु-
प्रेरण। उनकी दौर-दर का भावना समूही मात्र के व्याप्त होने के समय ही जाना
है, अनुभव है। उनका अंदह भी उत्तम नहीं चित्रना बाल्या है। प्रारंभ
में उसकी कोई-कोई स्थूल रूप निर्माण भी है किंतु उदय के भाव से उसका होता
दृष्टि है। उनके परवर्ती काव्य में विचारों की गहनता के भी दर्शन होता है। वह त्रिताका
का आन्तरिक सी-ले जिन चित्रों में उपर कर सामने आया है वह चित्रकला के
महत्त्वपूर्ण भाग बनाते है कि सम्पन्न है।
पंत की ने अपनी काव्य-भाषा के निमित्त जहां संस्कृत की व्यंजनापूर्ण तत्काल शब्दावली का प्रूढ़ होती है, वहाँ हृदय की ओर ब्रज, कारसी, उद्द तथा बंगली की शब्दावली की पी जाने साबी में ढाककर कोनिश एवं मधुर बनाया है। कौंता के साथ ही उनकी भाषा में विचारत्मकता का भी गुण परम्परा मात्रा भी प्रकट है। किरदार तथा गत्वात्मक दोनों ही विषय कविये बड़ी कुशलता पूरक होते हैं। कवि हृदय की कौशल भूमिति कला-छि-दिये के कौन नाबालिग से कीन्तकी सबादावली में प्रस्तुत हुई है। यह पूरा जान तो वंत जो का काव्य विचारत्मकता का उद्भव दे पी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

(ह) सुरक्षा के निराला

निराला की प्रवृत्ति यथापि मात्र काव्य-वृत्त के रक्षक उपन्यास, कहानी, निभन-योग से काव्य शास्त्री के वन्य विद्याओं में भी वर्तमान हैं तथा ही उनकी भूमिका से संबंधित काव्य की गृह काव्य में ही मिलती है। उनकी प्रमुख काव्य रचनाओं हैं--विनायक, राम्रति, गीतिका, तुलसीवाद, कुरुरुक्षेत्र, विश्वम्बर, केला, नर-पाणि, अन्न, बन्दी और वाराहिना।

निराला के काव्य के उद्भव के बढ़के बढ़के विशेषता उनका काव्य में प्रमुख वास्तविकता है। उनका वास्तविक संकेत व्यवस्थित पर भेदात्म के आकार बदलने के साथ ही समान्तर बन गई हो। यानि निराला उपन्यास वे आकार बदलने की मात्रा में वह स्वप्न मानने वाला है। उनका काव्य रंग और रंग उनके आकार के काव्य में वातावरण के ठोस वर्तमान पर ही लड़ा है। वास्तविकता के प्रतिपादन के कारण समान्त: उनका काव्य में बुद्धि-तत्त्व का रंग प्रभाव है फिर पूरे उन पर नीरकता का दोष लापरवाही नहीं किया जा सकता।

बन्धु सभी ग्रामवासी कवियों की माति निराला को पूरा प्रकृति ने अपने लो-दीये में बाँटकर किया है कितने यह मात्र कौन न ही रह कहौ भी है। प्रमुख एक इच यदि उनके "जोरही" की कही तथा "सन्ध्यां-संदर्की" के रूप
में अपने कोम्फोट जीवनयः से हमारी की है। तो दूर और "बालक-राम" जैसी कविताओं में विश्वव्यूह के भी दर्शन कराती है। छा कविता में गोचर, केवल और गाँवीसे हूट बूट कर पड़ा हुआ है। उनके कविता का उपयोग वाले विक्रेट केले को मूह ही नहीं वरन् बीमड़ी भावना, की प्रतीति कराने में की समी है।

कवि की राष्ट्रीय माहवानाओं का परिवर्तन आती संबंधी कविताओं में प्रचलित है। "युगनारे, महा रज शिवाणी का पत्र", जैसी कविताओं में हमारी संक्षिप्त प्राचीन ग्रन्थी उन्होंने भारत के प्राचीन ग्रन्थी तथा हैतकीय भव्य चित्रण द्वारा तत्कालीन भारत-वासियों के दृष्टि में राष्ट्रीय पत्रकार बाहुल्य करने का प्रयत्न किया है।

इन वरिष्ठतर्की के अतिरिक्त हमने काव्य की सबसे क्षणिका विशेषता है। विद्वान जो बहुतव: निराकर कौ "निराकर" वर्गात है। सामाजिक पंडित-योजनाओं के दृष्टि में विद्वान की इम्यो माहवा उपर्युक्त साहित्य में उस की समस्त कलक्षेपित है और तब "जूही" की कविता तथा "साहित्य" जैसी रचनाओं का रचनाकाल "नपे पत्र" तथा "कुछरुबुच" जैसी कविताओं हिस्से लगा। बहुत तथा लोग परिप्रबोध के विद्वान का यह स्वर माह लवकपा में ही नहीं वरन् क्रम-पक्ष में की गृहज़ा। स्वरों के बारे में कविताओं का मौलिक प्रयोग करते हुए माहवा की शिक्षित विनिवेशक के लिए कवि ने "भुक्त-जन्त्र" की श्रोति की।

उनकी विधियों से रचनाओं मुक्त ब्लॉक में पाई जाती है जो प्रतीत होते हैं वही निवन्धात्मक है। दंतकृत के प्रकृत पंहित होने के कारण माहवा पर उन्होंने अभी विवेक रचनाओं है। ग्रन्थव्यूह के लिए हमारी उपर्युक्त ग्रन्थ समस्त पदावनों की अपनाया है किन्तु परस्तर रचनाओं में माहवा का सामान्य रूप ही दृष्टिगोचर होता है। उनकी माहवा के जीवन के बाद व्यवस्था विद्वान का प्रथा बालक का प्रथा विक्रिया भित्ति करता है। राम की शक्ति पूजने हिस्से ज्ञान उद्योग है। उनके काव्य में संगीत तत्का की भी प्राचीन भित्ति है। इस पहली निराकर के काव्य में विचित्र, संगीत, और काव्य का की विकृति प्रवाहित हो रही है।
सम्पूर्ण रूप से कहा का संकल्प है कि क्षायावादी लालित्य में वर्तमान 
विषय तथा भावना दृष्टियों के निराला का योगदान कम नहीं है।

(४) महादेवी कमी

यदापि क्षायावाद में इनका आत्मविश्वास हन कवियों के बाद हुआ पर 
सम्पूर्ण पर युग प्रभाव के कारण बना कवियों की रचनाओं में जहां 
कही एक परिवर्तन हुआ वहाँ महादेवी बनी तथा एकान्त मान से क्षायावाद के ही पथ पर करी रहीं। विश्वास मज्जा की दृष्टि से इनकी प्रमुख रचनाओं हैं — नीलांग, 
निमंत्रण, नीरांक, प्राणमयी, और दीपक। प्रारंभिक कारण रचनाओं का एक 
बहुत कहा योगदान समान ने भी प्रकाशित हुआ है।

विषय की दृष्टि से महादेवी के काव्य में वेदना भाव का वाचन- 
पद्धति है। इसे पीढ़ा इतनी प्रिय है कि वे कहा लिखने के लिए ही नहीं 
किया है क्योंकि वे जुड़तित तथा भावना के युक्त होने के कारण पीढ़ा में जीवन का 
स्मृति स्वतंत्र होने के कारण हनके 
काव्य में माधुर्य है जबकि मिलने में तत्त्व की जड़ता भी जाती है। महादेवी 
के यह मेला भाव व्यक्तिक्तिविशेष नहीं है वरन् वह समूहित साथ भी व्यक्त नहीं है।
हु और सीढ़ी तरीक़े का किरदार प्रभाव होने के कारण इनकी पीढ़ा में विश्व- 
वाचन की धारा प्रकटित हुई है।

वेदना के पश्चात् इनके काव्य की मूर्ति विशेषता है रहस्यमयीता।

इनकी समस्त प्राणयोगिता का बालमून स्तुति न होकर स्तुति है, लौकिक न होकर 
आध्यात्मिक है। उद्ध विषम स्वतंत्रता के पुलः प्राणयोगिता में विशेषता करने हुए 
भी आध्यात्मिक अपनी सत्ता मिटाकर उनमें हीन नहीं होती बाह्य मर्यम रूपी 
मनंदर भी उस प्रिय की प्रतिष्ठा कर बाध्य के उसके वर्णन बाह्य होती है।

महादेवी ने पुकार का कहीं पी सत्ता वित्त्र नहीं लिखा वरन् 
वर्ग उल्लेख व्यथा प्रियतम के बीच-वह की फलक देखी है। यही पुकार कहीं-कही 
उग्र प्रिय के वाक्य भी पुकार की सुनता कही है —
“मुखाता सकल अराम, बलि क्या प्रिय बाने वाले हैं।”

इनके काव्य में किन नारी चुदम कहुणा, बिसर, बैलना आदि
मानों की वात्मिकता हुई है उनके के अनुश्रव निर्देश, मुझे प्राप्ति का ही
प्रयोग हुआ है। उनकी काव्य-पंजियों को पढ़ते हुए मन में आत्महार ही रेखा
की विश्लेषण की अनुभूति होने लगती है। इनके गीतों में चित्रकला का सतीत
कहना का अंदुमाल वस्तु हुआ है।

‘यामास’ तथा ‘दीपितिल्ले’ दोनों काव्य गुणों में महादेवी ने
गीतों के साथ स्वयं चित्र भी निर्मित किए है। उनके काव्य में उभरते पाएँ
चित्र चुदम मान की वात्मिकता करते हैं, साथ ही उनमें हलके रंगों का स्पष्ट
कहने की विशेषता है। यदि काव्य है जो उनके चित्रों में विशिष्टता नहीं है
चित्र-रामणी वही है जबकि उनकी धारा भिन है। उनके चित्र हृदय में कहीं
पीतर पैटर हुए प्रतीत होते हैं।

(प) ज्योतिर्कर प्रसाद

प्रस्तुत पुरवंघ प्रसाद का शब्द है। जवः उनके काव्य का निर्मल
परिवर्त यहां दिया जा रहा है। साथ ही खासजी अखंडपूर्ण होते हुए जी
श्रृदायाद के श्लोक तीनों समाहों के पश्चात् ही इबाद का उत्थान किया गया
है। प्रसाद युग-पुरवंघ साहित्यकार है। केवल काव्य ही नहीं रंग पहली,
उपन्यास, नाटक, निःस्कर हरी विचारों में उनकी प्रतिमा का प्रस्तुत हुआ
है। किन्तु यहां केवल काव्य ही विचार ही, जो के कारण उनकी वृत्तियों पर ही
प्रकाश हाला जायेगा जो इस प्रकार हैं:-

--------------------

9. आधुनिक कवि 9 - महादेवी वर्मा, गीत ४३,
पृष्ठ ५४।
(1) चित्राधार
(2) कानिन कुलम
(3) करुणालथ
(4) महाराणा का महत्व
(5) प्रेम पदिक
(6) करता
(7) बांधू
(8) लहर
(9) कामायनी।

चित्राधार

प्रसाद अग्रह प्रज्ञान में ही लिखा करते थे। ज्योति १६०३-६४ के भावपाय उन्होंने बद्रीनाथी में लिखा ग्राम प्रियलाभ। चित्राधारे कवि का पुरुषम काव्य शंकर है। प्रसाद के शीत वर्ष को भाग तक की प्रायः समस्त रचनाएँ इसमें वंकित हैं। इस ओर प्रसाद द्वारा राजानक कविताओं 'वन-थिन', 'प्रेम राज्य' तथा 'वर्द्धिणी' के वितारित पृथ्वी प्रकृति विषयक बने रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं।

पुरुषम रचना ही के कारण यथापि 'चित्राधारे' में कवि की कथा अपनी पूर्णता को नहीं प्राप्त ही पाते है फिर भी मात्र की कृतिते उनमें नीति नता बस्त फिलित है। मात्र समस्यागति के समिति दायरे से निकट कर ग्रज्ञान काव्य में स्वभावित उदारी के प्रति बाक्यवान प्रीति की जो कार्यों मूर्ति है वहीं स्वयं में एक पृथ्वीपूर्ण उपलब्धि है। पृथ्वी के संबंधित कविताओं में कवि का विशाल कुमुद मुखः दो उठा है।

प्रसाद की परिपूर्ण कृत्रिम भावना की भी पहले 'चित्राधारे' की कविताओं में मिलती है। रौंकालीन बन्धसम्पदित गृहरेप्रियता और द्वादशी
युगोन नीति रत्न दून विपिरित कपड़े हें के पाँच प्रसाद की संगमित कितनु नवनामिनारम बौद्ध-प्र्राम्प्रता की जो धारा प्रवा विस्तारित हुई है वह समूह सराहनीय है। भक्ति भाषा के भी कुछ नीति हबसे प्रवास होते है भगतू उद्घे मात्र पथर का निवास न्यून कितन का ही उद्घे उद्घे नहीं रथमे पाया है।

कानन कुलुम

प्रारंभ की लहीबौची भे रचिण पुटकर कवितार्कों का यह प्रयास लघु है। पौराणिक तथा शास्त्राभाष सारण गैटर भी नवन लेखकोप्रा द्वारा पाठी की नया स्थूप्त देते हुए कवि ते वनक आलोचनक कवितार्क विशिष्ट, वरत, कुरुपिन्त्र, वीर बालक, श्रीकृष्ण जयंती बालिय कही है। इसके अलावा का भुताण, मयी, भक्ति बालि हे भी प्रशिर हीकर कुछ कवितार्क अथम है। प्राचीन कवि अपने हस संगूं के विस्तार में कहता है -- "इसकें रागोन और बादे, लातव वाले और विद्वच, मकरन्द भ होए हुए, पराग में फिराये हुए सबी तरह के सूक्षम है।"

बहां तक आलोचनक कवितार्कों का प्रयास है उनमें केल कविनाल्लक स्तन है वरु भावाल्लक रूप में लघू प्रतिपादन ही कवि की मान्य की।

कुलुमाग्न

इस रचना में समस्त कथा की पाँच छोटे-छोटे भागों में विभाजित करके तथा र्यारहु पाठों का समाप्त वर कविन इस नाटक का रूप देते का प्रयत्न किया है कितन हे नाटक नहीं कहा जा सकता वरु मात्रकथाभी कही है युक्त कथा का व्य कहाँ अधिक सभी नीच है। इस कथा का वाह्य पौराणिक आलोचन है, कितन वस्त्र: कवि पौराणिक कथा के माध्यम में तत्कालीन

1. कानन-कुलुम - समस्तन : जयशेखर प्रसाद
स्थिति का विचार करते हुए विज्ञ में कहानी की श्यामना करता चाहता है। विष जापुरी क्रिया है, भैरव की विष ने नहीं वरन् कहानी एवं प्रेम ही धरा प्रकट किया चाहता है। कवि के इतने जीवन-दश्य से किंतु फलके हमें रक्त का प्रत्या होता है। इस काव्य में प्रकृति के व्यापक जीवन-दश्य की फलक की भंडारकी ही है साथ ही प्रकृति मुक्ति की सहपती रूप मे भी आमने-आमी करती है। प्रकृति तथा मानव प्रभुष: एक दूसरे के निकट बाते गये है। चित्रा-तमक्वत की दृष्टि से इस काव्य का वैशिष्ट्य है।

महाराणा का महत्त्व

यह एक ऐतिहासिक काव्य है। महाराणा प्रताप देशभक्ति तथा परम्परा होने के कारण ही तत्काल तथा भारतीय वादशी के भी प्रतीक है। इसी दृष्टि से कवि ने इस काव्य में प्रताप का बरिच्छ विचार किया है। ऐतिहासिक होने के बावजूद भी इस रचना में वर्तमान तथा संदर्भवा व्यावहारिक बनी रहती है। प्रकृति की भी दुनिया वर्णन हदें में प्राप्त होता है। इस रचना में कवि की साहित्यिक प्रेरणा के दर्शन होने लगते हैं।

प्रमाणधार

इसी करना कवि के पहले ब्रज भाषा में की थी। पर बाद में उसका डिन्दी श्यामना किया जो अपेक्षा कृपया ध्येय प्राप्त है। लघु डॉटो की आयात-नक कविता में कवि ने प्रेम को जीवन का मूल तत्त्व मानते हुए उसकी एक लेखावर्तन मनोरंजन परिभाषा प्रस्तुत की है। उनके प्रेम में यावक्ता या यहाँ वन के स्थान पर वातिका तथा आदर्शवादिता का प्राधान्य है। इसका प्रेम उच्च उद्देश्यवादी मूल पर पहुँच गया है जब वह दृष्टिकोश होते हुए भी अलावा विश्वविद्यालय का प्राधान्य किया है। इस काव्य गुण-शैल में मात्र-चिंताओं की कट्टर दैलेख की भिंती है।
फर्सा तक बाज़े-बाज़े माव एवं मानव दोनों ही दृष्टि ई कि में परिपक्वता दृष्टिगोचर होते होती है। झाँकाव से पूर्व तत्त्व वैयक्तिकता की भी इस रचना में पायी चौरकह भिंत्ने बनती है। अब चौरकह अपने काव्य में बाह्य-यत्न के विषय की बौद्ध वातावरणिक अवधारणाएँ को स्वर देने लग गया है। उद्देश पर, कुछ-कुछ बाद माननीय मानव दोनों की लूककर विमानिक्त होने के कारण इस संगम में हमें तलक बुद्धि रिताना जाते है।

धर पूरा जान तो इस रचना तक बाजे-बाजे कवि ने अपने आवकाश प्रकृति में पूर्णतः आता था। यही कारण है कि काव्य प्रकृति का मानव जीवन के सर्वप्रथम कवि हस्त गुर्ण की कविताओं में दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

आंदोल

'आंदोल' के प्रथम बौद्ध भिन्न विश्वास भिन्न है। प्रथम विश्वास में यह शुद्ध विश्वास काव्य है कि हरुँव भिन्न विश्वास तक बाजे-बाजे में बाजे परिखंड बन गए। इसमें पूर्वांग का वैदिक प्राचीन तथा दार्शिक चिंतन दोनों का प्रभाव-कांचन व्यंग फिरता है। पूर्वांग काव्य होते हुए भी अपनी आत्माप्रदीक्षा के द्वारा कवि ने हरुँका कुछ कथा का रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया है। विश्वास के विषय में ही धार्मिक यह विश्व-प्राचीन उनके समग्री आत्माप्रदीक्षा की आवश्यकता किया रहती है। 'आंदोल' का आलमदल नारी है तथा वह वैदिक नहीं सात्तारी लौंड़ नहीं। नह-शिल अभिन्न प्रकाश पर भी रौड़-रहस्योत्तरण माध्यम का उपयोग एकांतमार्ग है। 'आंदोल' काव्य में नारी भी फौरना नहीं वरुँ दृष्टि के रूप में आई है। उसके वभाव में जीवन मधुमूली मात्र रह रहा है। कवि ने अपनी कौवयान का लिख प्रकाश उदाहरण का विश्व किया है उस काव्य 'आंदोल' दृष्टिकृत का चौंस-होते होते बन गया है। उसके आलमदल में निर्वाण का अंतर नहीं वरुँ जीवन के प्रति आसा के दीप की जगमगात है।
हर्षप्रकृति-वार्ता का सत्तन्त्र रूप है न हीकर भावालुकार प्रवृत्ति करने हुआ है। भाव-भावना तथा शैशी सभी दृष्टियों से मानसून एक अपेक्षा गतिविधि
कार्य है। भावपरम वहीं ऐसे चित्र उपरकर का माना जाता है जो लेखक की भूमि पर
है। इन चित्रों में एक प्रकार का कोमलता है तथा हमने बारा कवि की खस्ता
जीवन-दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है।

लेखर

लेखर के गीतों में चित्रायुक्तता की दृष्टि से इन-उल्लुका की तरह श्लोकों में मिलता है। प्रणव-गीतों के साथ ही साथ शैशिक और दार्शनिक चित्र भी हर्षप्रकृति होते हैं। प्रणव-गीतों में भावालुक भावनाओं की अभिव्यक्ति होते हुए बी भी कहीं उल्लुका नहीं है। कवि यथाप्रस्तुत कपन को चूक नहीं पाया है। किंतु उन सुन्दरीयों से निराल प्रवृत्त करने का स्थान पर यह उनसे विभेदित करता है। अपनी भ्रम-पागना को उसने एक व्यक्तिविशेष में केन्द्रित करने के स्थान पर पुकार बस्त के संसार में विवेक विद्युत है। अपने
लेखन के कवीयों के बारे की तथा भावना की शीर्षक बा पुनःकर करने के वह संग्रह पुस्तक करता है।

हर्षप्रकृति में प्रकाशवेशीक की विचार, वेरलेर का स्थान सम्पूर्ण, तथा पेशीला की प्रतिबिध्यने कविताओं का आधार हर्षप्रकृति के रूप तथा मनोद्वार की दृष्टि कथाक सम्पूर्ण है।
कविता-विज्ञान के परमाणु स्थानीय नर-भूतार चक्रक दार्शनिक और परवान ताप के कारण वेशीक के मन में विज्ञान भावना का उद्ध लुत्ता था, अनुवाद तथा कवि के वास्तव मनोद्वार के दृष्टि से प्रसुल्त किया है। 
र्षप्रकृति का विवेचन हुआ है। किंतु वह दार्शनिक तथा भी शैशी सभी जो भी परवान भावना के स्थान पर कवि की दृष्टि का ही जो बनकर प्रसुल्त लुत्ता है। जन्मत
दूर कविताओं (वेरलेर का स्थान सम्पूर्ण पेशीला की प्रतिबिध्यने) भारतीय कविता
का गाँवपूर्ण चिन्ता उपस्थित करती है।
प्रथम की छायाएं भें कथा का वातावरण दैवितासिक होते हुए वहीं उसे एक खौफ परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा हतिहास के अवधारणा मानविक दृष्टि से नारी के दृष्टि में बदल वातावरण वहीं कुलक उपार कर सामने रखते का प्रयत्न किया गया है। मानविक वन्दन दृष्टि में कथा की कथा अपने वर्तमान रूप में प्रस्तुत किया हुआ है।

न केवल भाव वरना व्याप्ति, लक्षण अवश्यक दृष्टि से भी "लहरे" के गीत बड़ह हुन德拉 बन पड़े हैं। उन्हीं कविताओं के माध्यम से जो विचार उपर कर मानना वाले हैं के भारत मे मनोविश्वास व्यक्त का परिक्रमा करने मे लक्ष छोड़ा है।

कोयलानी

"कोयलानी" की कथा में हतिहास तथा कल्पना का मिश्रित कच्चा वस्त्र है। कवि ने हतिहास तथा पुराण "भें" विषयों बुद्धि हुई कथा की कल्पना के द्वारा एक पूरे मे परिवर्तक प्रस्तुत किया है। बुद्धि के उत्पत्ति तथा उसके विकास का हतिहास प्रस्तुत करते हुए वही कथा को केवल विचार विस्तृत नहीं है। कहा प्रथम, मनु शास्त्र का निर्देश, विषय, बुद्धि का प्रवेश, जन-वंश स्थिति तथा लोक से पुनः निकृष्ट जीव विवेक घटनाओं के कारण-वाद के ही "कोयलानी" का निरंतर दृष्टि है। मानविक के प्रथम पुरज की कथा वाले पर वह वाणिज्यक समस्याओं का समाधान के लिए लक्षण रूप में हुआ है।

पात्रों की रिश्तना भें कल्पना के साथ ही साथ मनोविश्वास दृष्टिओं का भी किरण हुआ है। मनुमत के प्रतिक है। शास्त्र इतिहासकार का मुख मानविकाओं की पुरातन है तथा इतिहास बुद्धि-कौशल की पुरातन है। पात्रों के रूप-वर्ण भें ही उनके गुण भें वही आधार बनाया गया है। कवि का रूप किया गया इनका कविता केवल वाक्य ही नहीं वाणिज्यिक तीन-दर्द है। कवि की रूप किया गया इनका कविता केवल वाक्य ही नहीं वाणिज्यिक तीन-दर्द है। कवि को चित्रित करने में वाणि है। रिश्तने में "कोयलानी" की रूप है। खुद ही मानविकाओं के लिए गृह दरीन तक का निरुपण कथा प्रकाश में विज्ञापन है।
एवं संस्कारों के सहारे हुआ है। मानव सत्ता भावों के अनुकूल है। प्रृकृति के ज़ूठ तथा चेतन चित्रों के वित्तिरिक्त लेखानि, काम, चित्रार्थ, जैसे केवल मनु-भावों के सीमाचर चित्र बनकर पाना, मानव पर बाध्य गतिकार के कारण ही संस्का हो रहा है।

बौद्धिकता और भिन्नता की विवशिष्टता के कारण संस्कृतित मानव-वीण वित्त की समस्त कृताकालीन परम दात्मिक का मानी दिखाया है। "कामायनी" का पुलिय उद्देश्य है। कामायनी के महाकाव्यवथ पर विचार करते हुए डाः नेहरू ने ठीक ही दिखा है—"मानव वैज्ञानक के विकास का यह महाकाव्य अपना मानव-सम्बन्ध के बिने का यह विचार रूपक अविनाशित के बिने में एक नवीन प्रश्न है—एक बड़ा महत्वपूर्ण है। समूह रूप ही इस कला अनुभवी न होगा कि मानवीय आयामों के कारण "कामायनी" शायावाद की सर्वोच्च देन के रूप में मुर्गी तक स्वरुप की जातियों। चित्रालेखकों की दृष्टि में रखते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी कृति है जिसमें चित्रों की विभिन्नता तथा वृत्तकता दोनों विशेषताओं दृष्टिगत होती है। जब और वर्तमान प्रृकृति के शेष मनोरंभ चित्र प्रसाद ने इसमें चित्रार्थ लिखित किया है जो बन्ध शायावादी कथियों की तुलना में उन्हें अनुभव बना देते हैं।

इन कामायनी पुस्तकों के वित्तिरिक्त प्रसाद के नाटकों में ग्राफ्ट गीतों पर भी वृहत हार सेता जनतानीय संगीत नहीं होगा क्योंकि प्रसाद का कवि रूढ़िय शाहिद के पूर्णकालीन वृत्त के स्वरूप को जातियों की दृष्टि में अस्तित करते हैं। इन गीतों में की कुछ है। ऐसे मनोरंभी चित्र उपलब्ध हो जाते हैं जिनकी उपस्थिति नहीं की जा सकती। इन नाटकों का गीतों की दृष्टि में बंधित परिवह रूप प्रकाश है।

स्कन्दगुप्त

स्कन्दगुप्त वंदनूपथ भिन्नता का पात्र था। उनके शासनकाल में वैसे

1. कामायनी के वाष्पण की समस्तां : डाः नेहरू नेहरू, पृष्ठ २३।
पर हृदय के रातार आक्रामण होते रहे। इस ऐतिहासिक तथ्य के साथ अन्य प्रबन्धित मान्यताओं का आवर्त तेज़ प्रशांत ने 'रंगचुंपा' का चित्रण किया है। इस नाटक में कुछ चौदह गीत हैं जो विभिन्न स्थलों पर हजन पहाड़ों हारा गाया गया हैं:

(१) नरीकल्यां — 'न कहना उस वर्तमान स्मृति के।'
(२) मातुंगा — 'वंवति के ने सुन्दरतम चावल ये ही फुल नहीं जाना।'
(३) मातुंगा श्रवण — 'छहा रोगी जब कब जू-भारे।'

(४) देवकेन्द्रा — 'भरा ताैं में मन में कन।'
(५) देवकेन्द्रा — 'धोने प्रेम तुम के।'
(६) नेश्न के — 'पालना बने पूर्व की छतर।'
(७) निवास — 'उमड़ी कर की भिन्नी बान।'
(८) नेश्ना के — 'जब जीवन भीता जाता है।'
(९) लकी — 'माही सालहें है रो लोगे।'
(10) नरीकल्यां — 'भरा दिन भी में लहरीयाँ भरी।'

| १. | स्निकुल, पृष्ठ १६. |
| २. | ,, पृष्ठ २२. |
| ३. | ,, पृष्ठ ३८. |
| ४. | ,, पृष्ठ ४३. |
| ५. | ,, पृष्ठ ५०. |
| ६. | ,, पृष्ठ ६१. |
| ७. | ,, पृष्ठ ५०. |
| ८. | ,, पृष्ठ ५५. |
| ९. | ,, पृष्ठ ६३. |
| १०. | ,, पृष्ठ ६६. |
(११) सक्न्युग्मि — 'बना दी जेपु मनमोहन।'
(१२) लेखना — 'वृंद मन मै खोल देख बसो कुंड मिलाया।'
(१३) विजया — 'उपम पूज की स्थाम लखियाँ उठायी हैं जन अछां।'
(१४) लेखना — 'देश की हुदैता तिलायी।'

वैसे जो कभी गीत अवसरानुकूल कथा पुनर्दर है फिर भी विज्ञातमकस को दृष्टि ले निम्नानिश्चित जो गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:-

मातृपुष्ट का रा गाया गया गीत — संख्या २ -- पुष्ट २२
विजया का रा गाया गया गीत — संख्या २३ -- पुष्ट २३।।

इन दोनों गीतों में प्राप्त विज्ञातमकस का उल्लेख वशोचित स्थान पर किया जायेगा।

चन्द्रगुप्त

इस नाटक की कथा तीन प्रमुख मध्यबंधों पर आधारित है द --
(१) धिक्कंदर का आदेश तथा कुंड ज्वस का विज्ञान (२) चन्द्रगुप्त का रा मीव लोभयां की स्थापना (३) धिलूघर विव धर अधर। इसमें गीतों की संख्या का रा भर्त ३२ है जो मिन-मिन पानी का रा गाये गये हैं द --

(१) हुकासिनी — 'तुम रंगक फिरण के बन्तराल में।'
(२) राजास — 'निक्षक मा बाहर दुरी बाहु।'

8. सक्न्युग्मि, पुष्ट १२३-१२४।
2. , पुष्ट १३३।
3. , पुष्ट १३३।
4. , पुष्ट १३०।
5. चन्द्रगुप्त, पुष्ट ५४।
6. चन्द्रगुप्त, पुष्ट ५५।
(२३) कानैलिया -- 'कुरुणा यह मधुम्य देश हमारा।'
(२४) बलका -- 'प्रथम धौन मदिरा धे मल।'
(२५) बलका -- 'निराकरे किरणा बलक भक्त भक्त है।'
(२६) सुगासिनी -- 'बाल इस धौन के माहरी हुत में।'
(२७) कल्याणी -- 'सुखा श्रीकर धे नहला दो।'
(२८) मालविका -- 'मधुप कह एक कह का है।'
(२९) मालविका -- 'बज रही बंधी भाटो धार की।'
(३०) मालविका -- 'जी भरे धौन की स्मृति।'
(३१) बहुत स्वरण में -- 'हिमालिका तुम्ह दुःख से चुरू शुद्ध माती।'
(३२) चुनियारी -- 'घे बजे ! वह प्रथमी रजनी।'

चन्द्रगुप्त के कही गीतों में चित्रात्मकता वही स्पष्ट रूप में उभरी है। गायन उदाहरणार्थ सुगासिनी धौन गाये गयी गीतों (चौ नं १, पृष्ठ ५४, छंदा नं ६, पृष्ठ १३६, कंवार नं २, पृष्ठ ११०) में चित्र उमर कर समाप्त बाये हैं। हन तीनों गीतों के चित्रितक कानैलिया धौन गाया गया गीत "कुरुणा यह मधुम्य देश हमारा" तथा बहुत स्वरण में गाया गया "हिमालिका तुम प्रेम से चुरू शुद्ध माती" तथा चित्रात्मकता की दृष्टि के बहुत सुन्दर वर्ण पीड़े हैं। इन गीतों में कवि की ऊष्म दृष्टि के लिए वार्ता व्यवस्थाएँ पर यह सही वर्तमान उनके वातावरण के गुणों पर पीड़ित है। यही कारण है कि चन्द्रगुप्त के गीतों भे प्राप्त चित्रों में एक फलक भी उसकी विचारमया है। भे गीत वार्ताओं की कृत्य-संवृतों की उद्देश्य करते हैं लक्ष्य है।

| १. चन्द्रगुप्त, पृष्ठ ५४. | २. चन्द्रगुप्त, पृष्ठ १३०. |
| ३. " " पृष्ठ १३५. | ४. " " पृष्ठ १३६. |
| ७. " " पृष्ठ १६५. | ८. " " पृष्ठ १६५. |
| ९. " " पृष्ठ १६५. | १०. " " पृष्ठ १६५. |
कामना -

यह मनोकृत्तानिक बाधार पर लिखा गया प्रतिकात्मक नाटक है। हरके जमीना पाट्रियों के नाम का भानव चिह्नित हो सकता है। नाम, बन्यो, लालना, विश्राम आदि। नाटक के बावजूद बाह्यक वृक्षारोपण के लागू पूज्यता की अनुमति है। हरके कुल छठ गीत फिरवे हैं पर चिह्नित मानव

की कृपा के ले जमीना छोटी खोटी है।

(१) कामना -- लृग बन बलवायू के कंधे।
(२) कामना -- सीरे तप बन लृग न जांचो।
(३) विलास -- पीले आम बा व्याला।
(४) चौरा -- छठा कैबी कोरी निराली है।
(५) लालना -- क्यों अभी चुम्ब जाए।
(६) सूर्यत्रान -- लिपवारीयों के ले - बाँध कही।
(७) कामना व्याल बलवायू -- जाब कोई तुम की न नज़र जाओ।
(८) वन चाँदी -- दूर्भों की स्थापष्ट पलनों मे।
(९) सूर्य गान -- कैम जो नाथ विचल का ले।

राजकीय

इस नाटक का क्रमानुसार हरके चिरियों पर बांधित है जिसमें रवीन्द्रनाथ आदि नायक की स्थिति का चित्रण है। इसके नामकरण इसके वर्ण की बाबन "राजकीय" के नाम पर होने के उपरांत भी यह नाटक चिरिय-
प्रथम न होकर घटना-प्रथम है। विषयांश घटनाओं के मात्रवृत्ति रूप के होने के कारण कभी न कैसे उल्लिखत हुआ है। इसमें कुछ सात गीत हैं जो हस्त प्रका र हैं।

1. पुराणा -- जाना विशत है मेरा।
2. पुराणा -- सख्ताह् कौंहै! श्री प्यार।
3. नैपूछ ने -- बच मैं नैति है तू नीच।
4. तुरमा -- कि प्रीति नहीं मन में कृष्ण श्री।
5. राज्यसी -- जो जयति करणा सिद्ध।
6. तुरमा -- अर्थ अर्थ घरा नाम।
7. समीत स्वर में -- करणा कारनिको बाधन।

इन समस्त गीतों में मात्र एक ही गीत चम्काहै कौंहै श्री प्यारे चिन्तामणिकला की दृष्टि से उच्च वन पड़ा है। इसका उत्तम यथास्थान किया जायेगा। इनमें भी गीत आगरा नुक्कूर है तथा इनमें चिन्तामणिकला की ध्यान में रखो इस स्त्रीली नहीं के बराबर है।

बन्धु तसूर

इसका कथानक ऐतिहासिक है। समय की दृष्टि से हमें युद्धकालीन भारत की राजनीतिक अवस्था का चित्रण है। इसका यथार्थ बाह्यता का स्पष्ट कर सक्या जा खड़ा ही बागाही है देखा है। हिमें कुछ वीदह गीत हैं जो निष्ठुर अवस्था पर भिन्न-भिन्न पात्रों द्वारा गाये गये हैं।

1. राज्यसी, पाष २३-३६।
2. राज्यसी, पाष ४२-५३।
3. " " पाष ५५।
4. " " पाष ६०।
5. " " पाष ६३-६४।
6. " " पाष ६८।
7. " " पाष ७१।
(१) भिलियारा -- न भरी कहकर हलके अफना।
(२) माराबी -- अली ने क्यों भला क्यों कहना की।
(३) नवीकरण -- प्यारी निर्मली की लोकर मत हमके मूल्य र।
(४) माराबी -- आधी दिखे 'थे' बहु प्राणा प्यारे।
(५) जीवन -- वचन बना हूँ 'थी' वचन।
(६) पुंजाबी -- सोहा मत सिंधे ही नि के तार।
(७) स्थाना --बहुत विमान उफन खड़ा बन।
(८) स्थाना -- जला है मन्यया गति भु फरम रची।
(९) स्थाना -- निंदन गोपीकृत प्रान्तर मे लोहे पत्ती 'थूँ' के बार।
(१०) वाणिज्य -- वस्त्र शरीव का उल्लास।
(११) विरोध -- अर्ठक की किंक विकल विरोधिया की पत्तिया का है विरोध।
(१२) स्थाना -- 'प्यारी है नहीं दूसरा और।
(१३) माराबी -- वजन दोहलता न विश्व मे जब।
(१४) समूहः -- 'कठ 'बानुत बाला बंधले है।

विज्ञाति की दृष्टि से 'स्थाना' कारा गया गया --'निंदन गोपीकृत प्रान्तर मे लोहे पत्ती 'थूँ' के बार।' बहुत ही मनोहारी है। वैश पधी गीतों मे 'प्रान्तर' उपकरण विश्वास है। जब और 'चतुर' की उपकरणों का व्याप्ति उपमान किया गया है। लंबे 'चित्र' एक समुपन्ण विख्यात उपाय' 'का' स्थान है।

--------------------------

१. अजातश्री, पुस्तक ३५। २. बजातियाँ, पुस्तक ४०।
३. 'पुस्तक ४१। ४. 'पुस्तक ४२।
५. 'पुस्तक ४३। ६. 'पुस्तक ४४।
७. 'पुस्तक ५५। ८. 'पुस्तक ५६।
९. 'पुस्तक ६०। १०. पुस्तक ७०।
११. 'पुस्तक ८२। १२. पुस्तक ८३।
१३. 'पुस्तक १३०। १४. पुस्तक १३४।
चूँत्सामिनी

तीन वेंकिंग के इस इतिहास नाटक की क्रम गुप्तकाल से संबंधित है।
समयमुद्धा के पश्चिम उत्तरकाल व पश्चिम पुत्र राम्गुप्त कार्य कर चढ़े आकाशों और वालिवट्ट्य, शेष युद्ध में पराजय, कठोर राजा राज्य का विषय तथा कठोर राजा चूँत्सामिनी का विवाह, इन्हीं घटनाओं के तारे-तारे में पूरी क्रम गुप्तकाल है। हर किसी की लंबी चूँत काल है। कुछ चार गीत हैं।

1. चूँत्सामिनी का गीतः -- पर कलक बो बांधू वल चा।
2. मदनविकि का गीतः -- पैर्थों नीचे काँचर है।
3. कौमा का गीतः -- धीर विचर वैरी वेंकी ब्रह्मा।
4. नदीक्रिया का गीतः -- बहसाकुल पर युवती सन्ध्या की लुंगी चलक चुंबराही है।

उपरोक्त गीतों में दो चित्रात्मकता की तृप्ति शे बहुत हुंदर बन पड़े हैं; प्रथम मदनविकि का गीत भूरे पैर्थों नीचे काँचर है। तथा दूसरे नदीक्रिया का गीत भूरे बहसाकुल पर युवती सन्ध्या की। श्रीम कोनी गीतों में भावपरक चित्र उपलब्ध है। पुस्तक के काव्य का यह बंग भरे पुस्तिभट्ट श्रेष्ठ है। इस नाटक में नाट्य कला तथा काव्य परिपक्वता कोनी विशेषताओं सुविधास्पद है।

1. चूँत्सामिनी, पृष्ठ २६।
2. " पृष्ठ ३१।
3. " पृष्ठ ३२।
4. " पृष्ठ ४०।
एक झूठ

यह पुस्तक का छत्रपति नाटक है जिसमें बप्पी जीवन कंचन के विचारों को कामिन्यकर करने के लिए ही तैलक ने बाबासाहाब तथा पात्रों की सजीवता की है। सभी पात्र गौरवी मूल्य में एकत्रित होकर विचारित और उत्पन्न जीवन पर विचार करते हैं। ऐसे विचार में घटनाओं का कोई स्थान नहीं होने के कारण नाटक में घटनाओं का एकान्त भरण है। इसमें कुछ चार गीत हैं।

(1) नेपाल -- लोट तू जीवन भी बांसुरी लोटः
(2) यशोदा -- जीवन-जन में उमियाली है
(3) यशोदा -- कायर की माला
(4) लम्हा -- मूर्ति मिलन कुंज में

विन्यास

इस नाटक के कथाचार मुख्य अवस्था में कल्पना कुल राजकारणी पर आधारित है। शासक के कारक एवं उपकरण ही जाने पर महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल तथा उसके दौरान भी प्रमाण एवं दौरान हो जाते हैं, कँग्रेसी राज्य में फिरी बाबासाही एवं अव्वलस्ता का चिन्तन पुस्तक ने अपने इस नाटक में किया है। इसमें बटाराक गीत है।

-----------------
1. एक झूठ, पृष्ठ १२।
2. " पृष्ठ २३।
3. " पृष्ठ २६-२३।
4. " पृष्ठ ३५।
(1) विशाल -- वह गणानम् केल शान्त था।
(2) चन्द्रेश्वर -- क्यों री ! बुल किस कोई कहते हैं?
(3) महान्त -- जीवन-मर बानन्द मनायें।
(4) कुकुर -- उन्हीं है लहर हरी-हरी।
(5) महाराजेश्वर -- मने है का पर में अन्धृर।
(6) नीँकी -- लख भी वंशी बसती है।
(७) नीँकी -- बाज़ मधु कीछ, यौवन वसन्त फिला।
(८) बाबू -- तू लो जगा किंचे वरे चानन्द रूप है।
(९) भ्रमणानंद -- पब्बार नाम यह चित्रा बंतार न।
(१०) चन्द्रेश्वर -- देखी नया ने एक
वह झव की झटा निराली थी।
(११) चन्द्रेश्वर -- हमे भी पूर गई, हाँ देखी मधुर मुस्कान।
(१२) महाराजेश्वर वाला -- लगा दो गहने का बाजा।
(१३) वष्णु -- भम जन को बुरा कर कहते है के।

1. विशाल, पृष्ठ ११।
2. " " पृष्ठ १२-१३।
3. " " पृष्ठ १५।
4. " " पृष्ठ १६।
5. " " पृष्ठ २१।
6. " " पृष्ठ २३।
7. " " पृष्ठ २३।
8. " " पृष्ठ २६।
9. " " पृष्ठ २०।
10. " " पृष्ठ ३२।
1१. " " पृष्ठ ३३।
1२. " " पृष्ठ ३६।
1३. " " पृष्ठ ४२।
(६४) प्रभानन्द — मान हूँ कि यह उसे मानाने र ।
(६५) वन्दनेश — कर रहे हो मानो, तुम जब विश्व मंगल कामना ।
(६६) खिलाया — नकल छोर है मरीच ।
(६७) इसारी — दीन दुःखी न रहे कोई ।
(६८) नारेश — जंदह के कोने कोने है ।

गीतों की संख्या इतनी ज्यादा होते हुए, भी विचारात्मकता की दृष्टि से एक ही गीत उल्लेखनीय है। वन्दनेश का गाया दुःखा गीत -- देखी नमको ने एक पह ब्रज की कटा निराली थी।। श्रेणी सभी गीतों में वर्णनात्मकता अभिकर्ष है का व्याख्यात्मक कम ही है।

क्षेत्रवाद की महत्वपूर्ण विशेषता विचारात्मकता की दृष्टि में रहकर हुए प्रसाद काव्य के परिवारात्मक विशेषण के प्रभाव विचारात्मकता की प्रकृति की स्रोतित करता उपयोगी होगा। जैसा कि पीछे उल्लेख किया गया है विचारात्मकता का लोक की संख्या संबंधित विचारात्मकता है। व सूत्र, यह इसी काव्य-विशेषता है जो विचारात्मक का काव्य-कहानी में संबंधित करते खुशता करती है। विचारात्मक के 'कथासंगीत' तथा 'प्रमाणां अंगे बहुत बाहरी बारीक व हेतुपर्याय के बुले हैं वहाँ भाव, वाच्यवाच्यात्मक हैं जन व आंतरिक जी-देह की मावर्तक अभिव्यक्ति है सम्भव है। कादबे तथा 'विचार-विधान' तथा 'बाहुल्यात्मक' अंगे 'रंग' की समुचित संयोगा के बी-देह की सारी प्रतीक करते हैं। काव्य के बारे पर कहा जाए। क्रियाओं द्वारा विचित्र-उपकरणों के साधन द्वारा विचित्र-प्रकार के चित्रों का निर्माण विचारात्मकता है। किसी वक्त की वैधता का परिचय किसी काव्य में उपलब्ध चित्रों द्वारा भी प्रभावित होता है। इसी कारण 'का व्याख्यात्मक चित्र

1. विशाल, पुस्तक ५४।
2. " पुस्तक ५६।
3. " पुस्तक ६१।
4. " पुस्तक ६६।
5. " पुस्तक ५९।
कविता के जल्दी का काल या चीनी-पंडी मात्र नहीं; उसके अविलोकन में अंक है।

कवि अपनी भनुमूल्याओं की विभिन्न चित्रों द्वारा पृथ्वी कुएँ प्रचार करता है। वह विशेष कवि के पाठमें उसके विशेष परिवेश तथा परंपरागत चर्चाओं के संपूर्ण ही कर निभाते हैं। यद्यपि काव्य है इन चित्रों के चित्रों में जुड़े, तत्त्व, विश्वव्यंग भौतिकता का उल्लेख भी रहता है। वह चित्रों निभाने अभिक्रिया स्पष्ट गोरे उसके ही अभिक्रिया प्रभावशाली भी होगे। इसमें एक पुकार की ताज़ता व तीव्रता अपेक्षित है। प्रचार इस वृद्धि के संबंध अभिक्रिया चित्रतर कल्पना है। उनके चित्रों में ऐसी संख्या है जो अविश्वसनीय तथ्य के केंद्रीय कुटे कर पाता के मानस-प्रवास के समय प्रमुख होता है। प्रचार के समय बहुत से हाया-वादी कवियों के कविता का निंदन अभिक्रिया चाहिए उनका पहले के कवियों के नहीं रखा था। हाया-वाद के हस्तों में -- "कल्पना का निंदन गुरुगमन हाया-वाद में हुआ उनका नहीं ज्ञात हुआ था। जानवर: कविता के ज्वात्र में हाया-वाद के पहले "कल्पना" का प्रचार भी नहीं हुआ था। हाया-वाद-युग में कविता और कविता परवर्ती हो गये।" ऐसी कल्पना के लेखक हन कविता ने ऐसे-ऐसे चित्र उभारे कि ऐसे ही बनता है। " कल्पना का उत्पादक बुद्धि के निम्न खंडों और कविता की उद्घाटन में की किया गया है। और उन्हें अवश्य करने वाले पूर्वोक्त तथा चित्रों की घटना पर ही। ३ इन चित्रों या चित्रों की सामग्री बत्तन विस्तृत है, यही कारण है क्योंकि प्रकृति पर या के प्राकृतिक वैसूँ पर हाया-वाद के कवियों का पूर्ण अविलोकन है। हाया-वाद ने ठीक ही लिखा है -- हाया-वाद का काव्य-फलक प्रकृति के वर्णन गुप्त-नचन, रंग भास्त, चित्रकूट और दिव्य चित्रों के ज्ञात है: प्रकृति के समस्त रंग-उपकरण गायनाश जंग, सुवर्ण, तार-रंग, बाल, चंचली, इन्द्र-शुष्क, बलस्य पूल, पची, वृक्ष और

1. हिंदी वार्तिक कोश, पृथ्वी ३४.
2. हाया-वाद: हाया-वाद की भाषा, पृथ्वी ३४.
3. हिंदी वार्तिक का इतिहास: हाया-वाद की भाषा, पृथ्वी ३४।
लहार, पर्वत, नदी, निर्माण और लाइट, लीला-चांदी, रंग-रंगाणी —
बपने-बपने बृहद रंगों का विभेद इत्यादि कथा कल्पना के लेखकों के साथ नाचते हैं।
यही कारण है कि प्रभावकाय की चित्रहस्तकला के सी-वर्य का विवेचन प्रसूत
प्रवचन में छलकर उपकरणों द्वारा सन्धित चित्रों के बादार पर किया गया है।
वागे के विभिन्न अभ्यासों में बहु प्रकृति के लेखक मानव के सदस्म मायाओं तक के
चित्रों का विवेचन पृथक-पृथक रूप में किया गया है।

—

1. नयी चमत्कार: नये संदर्भ, पृष्ठ ६३-६५.